मुंबई-पुणे के बाद चंडीगढ़ में एसेंट शुरू, युवा प्रोफेशनल्स के ग्रुप करेंगे एक-दूसरे की मदद

कारोबार बढ़ाना सिखाएगा 'एसेंट'

गुलशन कुमार | चंडीगढ़

घरेलू कारोबार को आगे बढ़ाने वाले युवा कुछ अलग करना तो चाहते हैं, लेकिन सही दिशा के अभाव में वे आखिर में पारंपरिक बिजनेस प्रैक्टिस को ही अपना लेते हैं। ऐसे में वे कारोबार बढ़ाते तो हैं, लेकिन उस स्तर पर नहीं ले जा पाते, जिस पर उसे ले जाया जा सकता है। ऐसे ही युवाओं के लिए एक नई पहल की जा रही है, जिसमें वे एक ग्रुप की तरह एक-दूसरे की मदद कर सकेंगे। एक साल पहले मुंबई और पुणे में शुरू हुआ एसेंट (एक्सलरेटिंग स्केलिंग अप ऑफ एंटरप्राइज) अब चंडीगढ़ और पंजाब में शुरुआत कर रहा है। मैरिको इंडस्ट्री के चेयरमैन हर्ष मरीवाला द्वारा एक एनजीओ के रूप में स्थापित 'एसेंट' का नया चैप्टर चंडीगढ़ में शुरू हो रहा है, जो रीजन के उद्यमियों को नई सोच और अवसर देगा। टाई के पूर्व एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर और अब एसेंट को आगे बढ़ा रहे मानक सिंह ने बताया कि लुधियाना, जालंधर में अपने खानदानी कारोबार को आगे बढ़ाने में दूसरी और तीसरी पीढ़ी आ चुकी है, लेकिन वे अभी भी कारोबार के लिए पूंजी का प्रबंध करने के लिए अपने घर या फैक्टरी को ही गिरवी रखते हैं। वेंचर कैपिटल और पूंजी जुटाने के अन्य अवसरों के बारे में वे बहुत सीमित जानकारी रखते हैं। सीमित संसाधनों से पूंजी जुटाकर वे कारोबार तो अच्छा चला रहे हैं, लेकिन वे नाइक, एडिडास, प्यूमा जैसे ब्रांड स्थापित नहीं कर पा रहे। एसेंट उन्हें इसी दिशा में लेकर जाना चाहता है।

मानक सिंह का कहना है कि ट्राईसिटी और पंजाब में एसएमई और युवा प्रोफेशनल्स एवं उद्यमियों की संख्या अच्छी-खासी है, लेकिन वे अभी भी कारोबार को सीमित स्तर पर ही विस्तार दे पा रहे हैं। एसेंट उन्हें ऐसा मंच प्रदान कर रहा है, जिससे उन्हें सफल उद्यमी बनने के लिए हर प्रकार का प्रशिक्षण और जानकारी प्राप्त हो सकेगी। उन्हें अन्य सफल उद्यमियों से मिलने का अवसर दिया जाता है।

परिवार के कारोबार को बढ़ाया 4 हजार करोड़ तक: पैराशूट जैसे सफल ब्रांड को स्थापित करने वाले हर्ष मरीवाला अपने परिवार के कारोबार को आज 4 हजार करोड़ रुपए के बिजनेस में बदल चुके हैं। 1971 में यह सिर्फ 40 लाख रुपए का ही था। अपने अनुभव को वे अन्य युवा उद्यमियों में भी बांटना चाहते हैं। इसीलिए एसेंट में किसी से भी कोई फीस नहीं ली जाती। ट्रस्ट ग्रुप के सदस्य अपने खर्चों को खुद ही बांटते हैं।

ऐसे काम करता है एसेंट

सबसे पहले उद्यमियों को चुन कर 10-10 सदस्यों के ट्रस्ट ग्रुप्स बनाए जाते हैं। ये उद्यमी विभिन्न उद्योगों से जुड़े होते हैं, लेकिन उनके उद्यम का सफर एक जैसा ही होता है। वे इस दौरान पूंजी जुटाने से लेकर तकनीकी मुश्किलों, मार्केटिंग एवं सेल्स के बारे में एक-दूसरे की सलाह लेते हैं। उन्हें अपने कारोबार की व्यापक संभावनाओं को समझने का अवसर प्रदान किया जाता है, ताकि वे उसे उस स्तर पर लेकर जा सकें। एसेंट से जुड़ने वाले उद्यमियों को सामूहिक ताकत का लाभ मिलता है और वे समूह के अन्य सदस्यों के अनुभव से काफी कुछ सीखते हैं। उन्हें अन्य ट्रस्ट ग्रुप्स के सदस्यों के साथ बातचीत करने और विचारों को बांटने का अवसर भी मिलता है। एक समान माहौल में वे नॉलेज गुरुओं से ज्ञान भी हासिल करते हैं।